International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 147-150

'अमिता' का तात्त्विक विश्लेषण

डॉ० उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला वलसाड, गुजरात, भारत।

सारांश

यशपाल हिंदी के माक्सवादी कथाकार हैं। 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'पार्टी कामरेड', 'दिव्या', 'मनुष्य के रूप', 'झूठा सच', जैसे समाजवादी उपन्यासों की रचना करने वाले यशपाल जी ने 'अमिता' जैसा ऐतिहासिक उपन्यास और 'मक्रील' जैसी कहानी लिखी। जिनका मार्कसवाद से कोई सरोकार नहीं है। अमिता' इनका ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मं कल्पना को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास है जिसमें उनके समाजवाद का स्वर बदला हुआ है।

मूलशब्द: यशपाल, समाजवाद, ऐतिहासिक, विश्वशांति।

1. प्रस्तावना

'अमिता' यशपालजी का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। 'दिव्या' भी उनका ऐतिहासिक धरातल पर आधारित उपन्यास है। इन दोनों उपन्यासों में बौद्ध धर्म पर आधारित कथा दी गई है। अमिता उपन्यास में इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना को लेकर सामयिक युग की समस्याओं एवम् विषमताओं के परिपेक्ष्य में रखकर कथानक का विकास किया गया है।

2. कथानक

कलिंग के महाराज की पुत्री अमिता की आयु छः साल की है। मगध के सम्राट बिंदुसार का पुत्र अशोक सिंहासन पर बैठने के बाद चार वर्ष तक अपने अंतरंग प्रतिद्वंद्वियों तथा शत्रुओं के निर्मूल नष्ट करता है। राजवंश के प्रतिद्वंद्वियों से निश्चिंत होकर अशोक ने अपना राज्याभिषेक कर सम्राट की पदवी ग्रहण की और दक्षिण दिशा में, साम्राज्य प्रसार के लिए कलिंग देश पर आक्रमण कर दिया। कलिंग के महाप्रतापी महाराज करवेल ने आगे बढ़कर उसके आक्रमण का प्रतिरोध किया और अशोक को परास्त होकर वापस जाना पड़ा। उस युद्ध में महाराज करवेल इतने अधिक घायल हो गये कि एक वर्ष तक शल्य–चिकित्सा करवाने के बाद भी स्वास्थ्य–लाभ न कर सके। राज–ज्योतिषों द्वारा बताई गई जिस शुभ–घड़ी में महाराज ने अशोक के आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए उत्तर दिशा की यात्रा की थी उसी समय उनकी पत्नी महारानी नंदा ने एकमात्र संतान, अमिता को जन्म दिया। मरने से पूर्व महाराज करवेल अपने वंश और राज्य की रक्षा का भार राज्य–परिषद पर छोड़ जाते हैं।

राजकुमारी अमिता युवराज्ञी बनाकर राजसिंहासन की उत्तराधिकारिणी घोषित कर दी जाती है। महाराज के मृत्युपरांत महारानी नंदा राज्य–संचालन तो करती थीं किन्तु पूर्ण तया विरक्त होकर। अशोक के द्वारा पुनः आक्रमण की सूचना पाकर महामात्य वेणुकग्राम पर दुर्ग बनाने का विचार करते हैं तो महारानी निषेधाज्ञा देती है। महामात्य युद्ध के लिए धन एकत्रित करना चाहते हैं तो महारानी प्रार्थना करनेवालों का धन विहार में सुरक्षित करवा देती हैं। महामात्य प्रजा में युद्ध के उत्साह के लिए महाबलि–यज्ञ का आयोजन करते हैं तो स्थविर असंद के प्रभाव में आ कर महारानी इसके निषेध की घोषणा करवा देती हैं। फलतः राज्य–परिषद् उन्हें गुप्त योजना द्वारा श्रीर्ष दुर्ग में बंदी बना देती है। इससे नगर सेट्ठी जैसे लोगों में खलबली मच जाती है क्योंकि उन्हें अब सीधा महामात्य के शासन में आना पडेगा। अतः वह राजदासी हिता को उकसाता है। हिता शिल्पी विट्ठल के एक दास मोद से प्रेम करती है। इसका लाभ उठाते हुए सौमित्र हिता से कहता है कि मोद मंदिर में जाकर शंख बजाये और राजमाता के लौटने की प्राथना करें। सुवीर को भी वह राजमाता के बारे में तरह–तरह की फैली बातें बताता है। हिता को जब पता चलता है कि राजमाता को श्रीर्ष दुर्ग में ले जाया गया है तो उसे भीतर जाने से कौन रोक सकता है और हिता ऐसा ही करती है। उधर अशोक की सेना भद्रकीर्ति के बंदी बनाये जाने के बाद नगर पर अधिकार करने के लिए बढ़ने लगती है। महामात्य चिंतित हो उठते हैं। वे दक्षिणापथ के लिए पलायन कर जाते हैं। अशोक राजप्रसाद तक जा पहुँचता है और उसका सामना अमिता करती है उसकी बाल–सुलभ किन्तु तर्क पूर्ण बातों से वह निरुत्तर हो जाता है और भविष्य में युद्ध न करने की घोषणा कर देता है।

इस ऐतिहासिक कल्पना से युक्त कथा के माध्यम से यशपालजी युद्ध की विभीषिका दूर करने तथा विश्व–शांति की स्थापना के अपने उद्देश्य में सफल रहे हैं। उपन्यास की संपूर्ण कथा रोचक है और अपनी स्वाभाविक गति से आगे बढ़ती है।

उपन्यासकार ने 'अमिता' की ऐतिहासिकता के विषय में प्राक्कथन में लिखा है– "'दिव्या' के कथानक की भाँति 'अमिता' की कहानी भी इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना है। इतिहास की प्रामाणिक घटना केवल अशोक का कलिंग विजय के लिए आक्रमण और उस युद्ध के परिणाम अशोक का भविष्य में युद्ध न करने की प्रतिज्ञा कर लेना ही है। अशोक ने अपनी इस प्रतिज्ञा को शिलालेखों द्वारा चिरस्मरणीय कर दिया था। इस काल्पनिक कहानी का उतना अंश ही इतिहास है।"

इस प्रकार 'अमिता' उपन्यास की कहानी कल्पना पर आधारित है। इस उपन्यास में दो ऐतिहासिक पात्र हैं– सम्राट अशोक और महाराज करवेल। इसके अतिरिक्त उपन्यास के सभी पात्र काल्पनिक हैं। चाहे वह अमिता हो या आचार्य सुकंठ, हिता हो या मोद, महासेनापति भद्रकीर्ति हो या नगर सेनापति सौमित्र, महारानी नंदा हो दासी बापी। और इस उपन्यास की – अशोक का कलिंग पर आक्रमण और प्रतिज्ञा करना कि भविष्य में कभी भी युद्ध न करेंगे– यही दो घटनाएँ ऐतिहासिक सत्य

हैं। इसके अतिरिक्त की सभी घटनाएँ–अमिता की कहानी, मोद और हिता की प्रणय–कथा, आदि सभी काल्पनिक एवम् उपन्यासकार के मस्तिष्क की उपज है।

उपन्यास में वर्णित सभी स्थान ऐतिहासिक हैं और इसके अतिरिक्त सब कुछ लेखक की कल्पना। उपन्यास में वर्णित वातावरण भी तत्कालीन युग के अनुरूप है। उपन्यास में तत्कालीन शासन, कुचक्र, विलासिता एवम् दासियों को उपहार स्वरूप देने की जो प्रथाएँ थीं, वह भी ऐतिहासिक हैं। यही नहीं उपन्यास की नायिका जो कहती है– "किसी से छीनो मत, किसीको डराओ मत, किसीको मारो मत" – के ऊपर भगवान बुद्ध का जो प्रभाव है वह भी ऐतिहासिकता लिए हुए हैं।

डॉ.शशिभूषण सिंहल के मतानुसार– "'अमिता' में, 'दिव्या' की भाँति तर्क–वितर्क, विवेचन–विश्लेषण का तत्त्व मुखर नहीं है। इसमें, यशपाल ने मानव–जीवन का जो अन्वय किया है, वह इसकी कथा और पात्रों में पूर्णतया खप गया है। 'अमिता' उपन्यास–कला की दृष्टि से, 'दिव्या' की अपेक्षा श्रेष्ठतर कृति है।... 'अमिता' हिंदी के उन ऐतिहासिक विरल उपन्यासों में से एक है, जो बिना किसी प्रमुख प्रणय–कथा के पाठक को रसमग्न करने में समर्थ है।"

इस प्रकार 'अमिता' उपन्यास की कहानी का मूल स्रोत इतिहास की प्रसिद्ध घटना है। लेखक ने कल्पना का प्रयोग करते हुए भी इतिहास की घटना को तोड़ा–मरोड़ा नहीं है। उपन्यास के कथानक में दो ऐतिहासिक पात्रों को केन्द्र में रखकर अन्य पात्रों का सामान्य चित्रण भर ही किया है और उनके माध्यम से ऐतिहासिक वातावरण का पुनर्निर्माण किया है।

3. पात्र और चरित्र–चित्रण

उपन्यास की कथावस्तु का विकास पात्रों द्वारा होता है। इस उपन्यास में ऐसा ही है। पात्र कथावस्तु के अनुकूल हैं तथा उनका सजीव चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। इस उपन्यास में पुरूष और नारी पात्र–दोनों ही हैं। महाराज करवेल वीर, साहसी, चरित्रवान, उत्साही, देशभक्त, निर्भीक तथा बुद्धिमान हैं। आचार्य सुकंठ राजनीति और कूट–नीति के संचालक हैं। वे बुद्धिमान, दूरदर्शी, चिंतक और देश–भक्त हैं। महासेनापति भद्रकीर्ति साहसी, वीर, बुद्धिमान, देश–भक्त और निर्भीक हैं। नगरसेठ सौमित्र कुशल, सफल और निपुण व्यावहारिक बुद्धिमान व्यवसायी हैं। कंचुकी कलिंग देश की महारानी का विशष कर्मचारी, बुद्धिमान, सहनशील तथा कर्तव्य–निष्ठ है। मोद कुशल चित्रकार–मूर्तिकार, विट्ठल का दास, हिता का प्रेमी, भावुक एवम् संवेदनशील है। अशोक एक महत्वाकांक्षी, वीर, साहसी, उत्साही, निर्भीक तथा संवेदनशील राजा है। इनके अतिरिक्त स्त्री पात्रों में प्रमुख अमिता, नंदा, हिता और बापी हैं।

'अमिता' उपन्यास की नायिका अबोध, भावुक, चंचल, बुद्धिमती तथा अहिंसावादी बालिका है। महारानी नंदा अमिता की माँ, कलिंग की महारानी, बुद्धिमती, आदर्शवादी तथा अहिंसा में आस्था रखनेवाली नारी है। हिता कलिंग की युवराज्ञी की विशेष दासी, संवेदनशील, भावुक, मोद की प्रेमिका है। बापी हिता की माँ, बुद्धिमती, स्नेहमयी, भावुक है। इनके अतिरिक्त यूथप स्कंद, वासल, ग्रामीणवृद्ध, चारण, गर्मस्थ आर्य प्रजित, पद्मज, लोहित, राजमाता मही, सीता, लेखा, मातंगी, मौसी, सामंत प्रताप आदि अनेक पात्र हैं। लेखक ने सभी प्रकार के पात्रों का समावेश कथा में उपयुक्तता के अनुसार किया है। पात्र कथा पर हावी नहीं होते बल्कि कथा को अपनी सहज गति से आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं।

4. कथोपकथन

उपन्यासकार कथोपकथन का सहारा पात्रों का चरित्र–चित्रण करने, कथा को गति देने के लिए तथा रोचकता लाने के लिए करता है। कथोपकथन के द्वारा पात्र अपने बारे में, अपने साथियों के बारे में, देश, काल और परिस्थितियों के बारे में या शीर्षक या उद्देश्य के बारे में बताता है।

प्रस्तुत उपन्यास में हिता और मोद के वार्तालाप द्वारा नगर सेट्ठी की नीति, मोद और हिता के बीच पनपते प्रेम और दासों की स्थिति पर एक साथ प्रकाश पड़ता है– "सावधान रहना, लोग कहते हैं नगर सेट्ठी की नीति और अभिप्राय भाग्य की रेखा पढ़ लेने वाले भी नहीं जान सकते। जो धन तुम ग्रहण नहीं कर सकतीं, वह उसने तुम्हें क्या दिया, वह इतना अबोध नहीं है।"

इसके अतिरिक्त हिता और बापी के वार्तालात द्वारा भी शेठ, हिता और बापी के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। बालिका अमिता और सम्राट अशाक के संवादों में अमिता का अबोधपन, बुद्धिमती होना आदि का तथा सम्राट अशोक का आश्चर्यचकित रह जाना हमें देखने मिलता है।

महारानी और वृद्ध, हिता और दंडक, सेठ सौमित्र और वासल तथा पद्मज, आचार्य सुकंठ तथा महासेनापति आदि के वार्तालापों द्वारा इनका चरित्र–चित्रण तो होता ही है साथ में रोचकता और जिज्ञासा भी बढ़ती जाती है।

संवाद पात्रानुकूल हैं। जैसे बालिका अमिताऔर हिता के संवाद–

"अमिता ने और भी विस्मय से पूछा– तो दण्डक ने तुझे क्यों मारा?

हिता कहती है– अम्मे महारानी, मैं खेलने चली गयी थी।

अमिता का विस्मय और भी बढ़ गया– तू किससे खेलने गयी थी!

हिता ने लाज से रहस्य के स्वरमें उत्तर दिया– अपने प्रेमी से।

अमिता– तूने कैसा खेल खेला था?

हिता– अम्मे, प्यार का खेल।

अमिता– प्यार का खेल हमें भी सिखा दे, हम भी खेलेंगे।"

इस प्रकार 'अमिता' उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल, भावानुकूल, संक्षिप्त एवम् सरल हैं।

5. देश, काल और वातावरण

'अमिता' ऐतिहासिक उपन्यास है। इस कारण इस उपन्यास में तत्कालीन वातावरण का बहुत ही जीवंत वर्णन लेखक ने किया है। उपन्यास का प्रारंभ वातावरण–चित्रण से होता है– "गाँव के दूसरे वृक्षों और झोंपड़ियों की छाया में बँधे पशुओं के समीप बैठे लोग बाँस चीरकर चटाई, डलिया और पिटारी बनाने में व्यस्त थे। गाँव के कुछ बच्चे बिना वस्त्र के, खुछ कोपीन बाँधे और कुछ कन्धों पर झगला डाले पीपल के समीप ही धरती में छिद्र अथवा नालियाँ बनाकर खेल रहे थे।"

महारानी नंदा का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं– "महारानी का शरीर कंधों से कमर तक हिम के समान श्वेत दुशाले से ढँका हुआ छा। रूखे काले केश पीठ पर फैले हुए थे। कमर से पाँव तक के नखों तक श्वेत वस्त्र का अन्तरवासक लिपटा हुआ था। महारानी माथे को तनिक झुकाये, हाथ जोड़े मंत्र पाठ करती हुई चल रही थी। शरीर पर कोई आभूषण न था।"

लेखक ने प्रकृति–चित्रण के अतिरिक्त तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों का सुंदर चित्रण किया है।

6. भाषा–शैली

'अमिता' उपन्यास वर्णात्मक ढंग से लिखा गया है। इस कारण उपन्यासकार ने उपन्यास में कहीं–कहीं सरस एवम् प्रवाहमय शैली में सुंदर वर्णन किया है। जैसे– "हिता के अनमनी और व्याकुल होने के कारण का अनुमान कर लेना माँ के लिए कठिन नहीं था। हिता को व्याकुल और अनमनी देखकर बापी को यही आशंका होती थी कि लड़की दास कलाकार से भेंट के लिए नगर जाने का बहाना ढूँढ़ रही है। यह फिर अपने को संकट में डालेगी। बेटी की ऐसी व्याकुलता से बापी को क्रोध आता।"

इस उपन्यास की भाषा कहीं–कहीं साधारण बोलचाल की है तो कहीं–कहीं लेखक ने संस्कृत तत्सम शब्द जैसे– महामात्य, श्वेत, कर्मान्ताधिष्ठायक आदि का प्रयोग किया है। भाषा अलंकारों से युक्त एवम् काव्यात्मक है। भाषा सरल, रोचक, प्रवाहमयी, प्रसंगानुकूल, व्यंग्य–सभर, चित्रात्मक एवम् पात्रानुकूल है। वाक्य–रचना संक्षिप्त है। कहीं–कहीं लंबे वाक्य भी हैं। फिर भी यशपाल की भाषा कलात्मक एवम् सुघड है। "भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण पाठक भी इस उपन्यास को चाव से पढ़ सकते हैं।"

संक्षेप में, अमिता की भाषा में वह सारी विशेषताएँ एवम् गुण हैं जो भाषा–शैली में होने चाहिये। शब्द–चयन, वाक्य–रचना सभी दृष्टि से यह सफल, सार्थक व सक्षम रचना है।

7. उद्देश्य

लेखक या कवि की कोई भी रचना बिना उद्देश्य के नहीं होती। उसके मूल में उद्देश्य व्यंजित रहता है। 'अमिता' उपन्यास के 'प्राक्कथन' में लेखक ने महायुद्धों से त्रस्त विश्व–मानवता और विश्व–शांति की समस्या को उठाया है और इसी के फलस्वरूप इसकी रचना को प्रेरणा स्वरूप बतलाया है। इस उपन्यास के पात्र आदर्शवाद को लेकर चलते हैं, किन्तु अंत तक पहुँचते–पहुँचते यथार्थवादी हो जाते हैं। समाज में व्याप्त धार्मिक आस्था, भाग्यवाद, दास–प्रथा, निम्नवर्ग पर अत्याचार, मादक द्रव्यों के प्रति रुचि, उच्च वर्ग में व्याप्त विलासिता, देश की रक्षा का महत्व, युद्ध के कारण उत्पन्न स्थिति का चित्रण, बालिका की मानसिकता तथा अशोक के हृदय–परिवर्तन आदि घटनाएँ ही वे सब समस्याएँ हैं, जिनका चित्रण करना लेखक का उद्देश्य रहा है।

डॉ.पारसनाथ मिश्र का मानना है कि "'अमिता' में लेखक मार्क्सवादी सिद्धांतों से हटकर विश्व–शांति के उपायों पर चिंतन करता दिखाई पड़ता है और कथानक की मूल निष्पत्ति के आधार पर युद्ध का विरोध और प्रेम एवम् हिंसा से संचालित समाज की कल्पना करता है। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि यशपाल ने यहाँ मार्क्सवादी दर्शन छोड़–सा दिया है, परंतु लेखक के दृष्टिकोण में यह परिवर्तन उसकी राजनीतिक प्रतिबद्धता का ही प्रमाण है। अतः 'अमिता' में यशपाल साम्यवादी विश्व के राजनीतिक परिवर्तनों से जितना प्रभावित दीखते हैं, उतना माक्सवादी सिद्धांतों से नहीं। 'अमिता' के रचना काल में कम्युनिस्ट संसार उदय होने लगा था, विश्वशांति का नारा उधर से भी आने लगा था। अतएव 'अमिता' में उस नारे की अनुगूँज सहज और स्वाभाविक है।"

'अमिता' में यशपालजी ने अहिंसावादी विचारधारा का चित्रण भी किया है और मानवतावादी मूल्यों की प्रतिष्ठा भी की है तो दूसरी ओर हृदय–परिवर्तन की घटना भी सहज रूप से चित्रित की है। समाज की यथार्थता का भी वर्णन उपन्यासकार ने किया है। अतः श्री शांतिप्रिय द्विवेदी का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि "इधर प्रगतिवाद का स्वर बदला हुआ है। अब वह संघर्ष का वह शांति का संदेश देता है, संतप्त विश्व पर चाँदनी छिटकाता है। प्रगतिवाद का भौतिक दर्शन अब उन्मुख होता जा रहा है। यशपाल जी का नया उपन्यास 'अमिता' इसका प्रमाण है।"

8. शीर्षक

'अमिता' उपन्यास के 'प्राक्कथन' में यशपालजी ने इस संदर्भ में लिखा है– "हमारा राष्ट्र अपने जीवन की अवस्था सुधारने का प्रयत्न कर रहा है और हमारे समाज की प्रमुख भावना निर्माण की और है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए युद्ध के विध्वंस से बचे रहने की और विश्व–शांति की आवश्यकता अनिवार्य है।" इससे स्पष्ट है कि लेखक का मूल दृष्टिकोण विश्व–शांति को स्थापित करने का है। और इस उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र अमिता के द्वारा लेखक ने इस उद्देश्य की पूर्ति की है। उसे अपनी माता नंदा से आरंभ से ही शांति के माध्यम से जीवन बिताने और शासन करने का उपदेश मिलता है। इस उपदेश का अमिता पर जीवन पर्यंत प्रभाव रहता है और वह इसका सफल प्रयोग सर्वत्र करती है। महारानी नंदा अपनी बेटी को प्रतिदिन चौत्य से लौटकर अभिमंत्रित जल का पान कराती है और कहती है– "तेरा कल्याण हो! धर्म में तेरी आस्था बनी रहे। तू सदा बहुजन के हित लिए, बहुजन के सुख के लिए, बहुजन के परित्राण के लिए यत्न करे। तू किसी से छीनना मत, तू किसी को डराना मत, तू किसी को मारना मत। धर्म, भगवान और संघ तेरे रक्षक और सहायक होंगे। " और अमिता अपनी माता के इस उपदेश का सर्वत्र पालन करती है। वह कुत्ते को इसी शैली में डाँटती है। वह सैनिकों से कहती है– "तुम युद्ध मत करना...किसी से छीनो नहीं। किसी को डराओ मत।किसी को मारो मत। कोई युद्ध में न जाये। अम्मा कहती हैं– युद्ध और हिंसा पाप है।" वह सम्राट अशोक से भी कहती है– "तुम अशोक हो? तुम तो बहुत सुंदर हो! तुम प्रजा से क्यों छीनते हो ? तुम प्रजा को क्यों डराते हो ? प्रजा को क्यों मारते हो ? तुम्हें क्या चाहिये ?" और अमिता के इन प्रश्नों से सम्राट अशोक निरुत्तर रह जाता है। अमिता के आगे वह हार जाता है और अंत में प्रतिज्ञा करता है कि वह कलिंग की विजयी महारानी की भांति निश्छल प्रेम से संसार के हृदयों पर विजय करेगा। और 'अमिता' उपन्यास के द्वारा लेखक यही प्रतिपादित करना चाहते हैं।

यशपालजी ने बालिका अमिता को मूल केन्द्र में रखकर इस उपन्यास का नाम 'अमिता' रखा है। इस उपन्यास में लेखक ने विश्व–शांति, मानवता और अहिंसा के विचारों को व्यक्त किया है। इस उद्देश्य की पूर्ति अमिता पूर्ण रूप से करती है। अतः इस उपन्यास का शीर्षक 'अमिता' पूर्णरूपेण सार्थक एवम् प्रभावशाली है।

9. निष्कर्ष

'अमिता' उपन्यास का कथा–फलक बहुत विस्तृत है। इसमें विषय–वस्तु की विविधता, वर्णन वैविध्य, देश, काल और वातावरण की बहुलता तथा पात्रों की रुचि विभिन्नता के दर्शन होते हैं। यशपालजी ने अपने उद्देश्य अथवा दृष्टिकोण को इस उपन्यास के प्रमुख पात्र अमिता के माध्यम से रूपायित किया है अतः इसका नाम 'अमिता' रखा गया है। उपन्यासकार का यह मानना है कि युद्ध की समस्या का समाधान शांति और अहिंसा

के माध्यम से ही संभव है। इस प्रकार 'अमिता' एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है।

10. संदर्भ-संकेत

1. यशपाल, अमिता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1983, पृ.6
2. वही.पृ.33
3. सिंहल, शशिभूषण, हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,1988, पृ.359–360,
4. यशपाल, अमिता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1983, पृ.144,
5. वही.पृ.76–77
6. वही.पृ.23
7. वही.पृ.10
8. वही.पृ.138–139
9. मधुरेश संपा., क्रांतिकारी यशपालः एक समर्पित व्यक्तित्व, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007,पृ.121
10. मिश्र, पारसनाथ, मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,1972, पृ.146–147,
11. मधुरेश संपा., क्रांतिकारी यशपालः एक समर्पित व्यक्तित्व, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007,पृ.120
12. यशपाल, अमिता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1983, पृ.5
13. वही.पृ.21
14. वही.पृ.218